|| श्री स्वामी सामर्थ ||

|| श्री गायत्री चालीसा ||

।श्री गणेशाय नमः।
श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

॥ दोहा॥
ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड ।
शान्ति कान्ति जागृत प्रगति रचना शक्ति अखण्ड ॥ १॥
जगत जननी मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ।
प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥ २॥

॥ चौपाई ॥
भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।गायत्री नित कलिमल दहनी ॥ ३॥
अक्षर चौविस परम पुनीता ।इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता ॥ ४॥

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।सत्य सनातन सुधा अनूपा ।
हंसारूढ सितंबर धारी ।स्वर्ण कान्ति शुचि गगन-बिहारी ॥ ५॥

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला ।शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥ ६॥
ध्यान धरत पुलकित हित होई ।सुख उपजत दुःख दुर्मति खोई ॥ ७॥

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।निराकार की अद्भुत माया ॥ ८॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।तरै सकल संकट सों सोई ॥ ९॥

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥ १०॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं ।जो शारद शत मुख गुन गावैं ॥ ११॥

चार वेद की मात पुनीता ।तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥ १२॥
महामन्त्र जितने जग माहीं ।कोई गायत्री सम नाहीं ॥ १३॥

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।आलस पाप अविद्या नासै ॥ १४॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।कालरात्रि वरदा कल्याणी ॥ १५॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।तुम सों पावें सुरता तेते ॥ १६॥
तुम भक्तन की भकत तुम्हारे ।जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥ १७॥

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।जय जय जय त्रिपदा भयहारी ॥ १८॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना । तुम सम अधिक न जगमे आना ॥ १९॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा । तुमहिं पाय कछु रहै न कलेसा ॥ २०॥
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई ।पारस परसि कुधातु सुहाई ॥ २१॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई ।माता तुम सब ठौर समाई ॥ २२॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥२३॥

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।पालक पोषक नाशक त्राता ॥ २४॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी ।तुम सन तरे पातकी भारी ॥ २५॥

जा पर कृपा तुम्हारी होई ।तापर कृपा करें सब कोई ॥ २६॥
मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें ।रोगी रोग रहित हो जावैं ॥ २७॥

दरिद्र मिटै कटै सब पीरा ।नाशै दूःख हरै भव भीरा ॥ २८॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी ।नासै गायत्री भय हारी ॥२९॥

सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।सुख संपति युत मोद मनावें ॥ ३०॥
भूत पिशाच सबै भय खावें ।यम के दूत निकट नहिं आवें ॥ ३१॥

जे सधवा सुमिरें चित ठाई ।अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥ ३२॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।विधवा रहें सत्य व्रत धारी ॥ ३३॥

जयति जयति जगदंब भवानी ।तुम सम थोर दयालु न दानी ॥ ३४॥
जो सद्गुरु सो दीक्षा पावे ।सो साधन को सफल बनावे ॥ ३५॥

सुमिरन करे सुरूयि बडभागी ।लहै मनोरथ गृही विरागी ॥ ३६॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।सब समर्थ गायत्री माता ॥ ३७॥

ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी ।आरत अर्थी चिन्तित भोगी ॥ ३८॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें ।सो सो मन वांछित फल पावें ॥ ३९॥

बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ ।धन वैभव यश तेज उछाऊ ॥ ४०॥
सकल बढें उपजें सुख नाना ।जे यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

॥ दोहा॥
यह चालीसा भक्ति युत पाठ करै जो कोई ।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ॥

॥ इति श्री गायत्री चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु||